भट्टारक जिनसागर

जीवन-परिचय : भट्टारक जिनसागर देवेन्द्रकीर्ति के शिष्यों में प्रमुख हैं। इनका विशेष परिचय तो ज्ञात नहीं होता है। संस्कृत एवं हिन्दी दोनों ही भाषाओं में रचनाएँ लिखी हैं—इनका समय विक्रम संवत् 17-18वीं शताब्दी माना गया है।

रचना-परिचय : कवि संस्कृत एवं हिन्दी दोंनो ही भाषाओं के विद्वान हैं। इनकी अधिकांश रचनाएँ हिन्दी में हैं—

1. आदित्यव्रतकथा, 2. निजकथा, 3. पद्मावतीकथा, 4. पुष्पाञ्जलिकथा, 5. लवणांकुशकथा, 6. अनन्तकथा, 7. सुगन्धदशमीकथा, 8. जीवन्धर पुराण, 9. नन्दीश्वरउद्यापन, 10. आदिनाथ स्तोत्र, 11. शान्तिनाथ स्तोत्र, 12. पार्श्वनाथ स्तोत्र, 13. पद्मावती स्तोत्र, 14. क्षेत्रपाल स्तोत्र, 15. ज्येष्ठजिनवरपूजा, 16. शान्तिनाथ आरती।